Live in the Spirit

सीड़ फॉर लिविंग

ब्रदर मैन्युएल मिनिस्ट्रिज मासिक प्रकाशन सितंबर २००९

येशू एक निपुण व्यवसायकर्ता।

हर एक व्यापारी अपना एक उत्पादन बेचता है। परमेश्वर का उत्पादन है – येशू। येशू का भी अपना उत्पादन है – जीवन। शैतान का भी अपना उत्पादन है – मौत। शैतान का व्यवसाय है, आपको पिड़ा देना, आपको आपसे चुराना और मार डालना है। क्लेश देता है। आपसे सबकुछ चुराता है, और आपको मार डालता है।

अच्छा व्यवसाहीक बनने का रहस्य

1 एक अच्छा व्यवसायकर्ता होने का रहस्य।

अच्छा व्यवसायक अपने ग्राहकों को अच्छी तरह से समझता है। "अपने भेड़ों की झुण्ड के हालात के बारे मे आपको अच्छी जानकारी होना जरुरी है। आपके झुण्ड पर सावधानीपूर्वक ध्यान दो। (नीतिवचन – 27:23) येशू अपनी झुंण्ड को अच्छी तरह से जानते थे, इसी कारण उन्होंने कहा की, "मेरी भेंड़ें मेरा शब्द सुनती हैं; मैं उन्हें उनके नामसे जानता हूँ। और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं"। (यूहन्ना 10:27)

2 एक अच्छा व्यवसाहीक अपने आप को पूरी तरह से कुर्बान कर देता है।

येशूने दुनिया को क्या दिया? उन्होंने अपने आप को कुर्बान कर दिया। जब आप अपना सबकुछ कुर्बान करते हो, तभी ही आप एक अच्छे व्यवसाहीक बन सकते हो। हो सकता है, आपने अपने व्यवसाय मे बहुत सारा पैसा लगाया होगा। लेकिन, अगर आपके पास प्रार्थना सभा में आने का समय ही नही है, तो शायद आप अपने व्यवसाय मे लगाई हुई सारी पुंजी भी गवाँ सकते हो। परमेश्वरने येशू मसीह को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेकित किया। और इस वजह से ही वे दुनिया का भला करते गये। येशूने हरएक को अपना समय दिया है।

3 अच्छा व्यवसाहीक सही उत्पादन ही बेचता है।

येशूने सभी के जरुरत का ' अनंत जीवन' यह उत्पादन लोगों को बेचा। उनके इस उत्पादन से सभी को समाधान मिला। उन्होंने कहा, "जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दुंगा, वह फिर अनंतकाल तक प्यासा न होगा; वरन् जो जल मैं उसे दूँगा, वह उसमें एक सोता बन जाएगा जो अनंत जीवन के लिये उमड़ता रहेगा।" (यूहन्ना 4:13,14)

4 अच्छा व्यवसाहीक झूठ नहीं बोलता, वह अपने हर वादों को निभाता है।

बहुत सारे व्यवसाहीक तुरंत अमीर बनना चाहते है। इसके लिए वे झूठ बोलते है, चुराते है, और फँसाते है। जो भी वह करते है वे यह नहीं जानते कि, बहुत ही जल्द उनके सारे ग्राहक उन्हें छोड देंगे। येशूने अपने वादों को निभाया। उन्होंने लोगों से कहा कि,"मैं मेरे पिता के पास वापस जा रहा हूँ। लेकिन ध्यान में रखो, मै वापस आऊँगा आपको ले जाने के लिए। मै आप के लिए एक भव्य महल बनाने जा रहा हूँ।"

5 अच्छा व्यवसाहीक समस्याओं का हल निकालनेवाला होता है।

येशू एक कामियाब व्यवसाहीक है, क्योंकि उन्होंने लोगों की समस्याओं का हल बखुबी निकाला। उन्होंने भूखो को खाना खिलाया। उन्होंने कहा, "मैं ही जीवन की रोटी हूँ।" पश्चाताप करताओं के लिए उन्होंने माफी दी। बिमारों को चंगाई दी। जो दुष्ट आत्माओं के बंधनों में बँध थे, उन्हें मुक्ति दी। और पापों मे बहकती दुनिया के लिए, उन्होंने अपने ही जीवन की कुर्बानी दियी।

6 एक अच्छा व्यवसाहीक परमेश्वर के लिए अपना समय देता है।

बहुत सारे व्यवसाहीक असफल होते है, क्योंकि वह अपने व्यवसाय मे इतने व्यस्त होते है, कि वे ईश्वर के लिए अपना समय नही दे पाते है। येशू अत्याधिक व्यस्त थे। फिर भी, हर रोज भोर के समय पर्वत् पर जाकर प्रार्थना किया करते थे। वे जानते थे की, उनकी शक्ती यह पिता परमेश्वर की ही देन है। उन्हें ज्ञान और सामर्थ्य की जरुरत थी, और वे भली भाँती जानते थे की, वह सिर्फ उनके पिता से ही मिल सकती है। एक कामियाब व्यवसाहीक बनने के लिए आपको केवल प्रभू येशू का अनुकरण करना है।

– ब्रदर मैन्युएल मेरगुल्याओं

विस्थारित शिक्षा के लिए डि वी डि उपल्बध है।

दस आज्ञाए

आपकी प्राथमिकता क्या है?

ईश्वर ने दुनिया बनाई और योजनाओं द्वारा उसपर नियंत्रण लाया। फिर उसने उन योजनाओं को कार्यरत करने का काम मनुष्य पर सौंपा। लेकिन मनुष्य ने ईश्वर को उसमे असफल बनाया। फिर तब से इस दुनिया का बहुत नीचे नर्क के गड्ढे मे गिरना शुरू हो गया। मनुष्य की पापभरी और दुःखभरी अवस्थापर तरस खाकर ईश्वर ने अपने चुने हुए लोगों को इजिप्त के बाहर निकाला और उन्हे आज्ञाए दी जो एक निर्णायक नियमों का समूह था, जिस के द्वारा जीवन कैसे जीना है और उस के शाश्वत राज्य मे जीतते हुए कैसे पहुचना है यह बताया गया है। यह क्या नियम है? यह क्यो जरूरी है? यह हमे कैसे मदत कर सकते है? क्या ये अब भी हम से संबंधित है? और हमे इन नियमों की माला द्वारा हम इन मुद्दोपर ज्यादा प्रकाश डालने की कोशिश करेंगे, और इन सवालों का जवाब देने का प्रयास करेंगे। हर महिने मे एक आज्ञापर ध्यान देते हुए,शुरूवात करते है। पहली आज्ञा से :-

मैं आप का स्वामी, आप का ईश्वर, जिसने आप को इजिप्त के बाहर निकाला है, गुलामी की जमिन से। मेरे व्यतिरिक्त तुम्हारे दुसरे कोई भी भगवान नही होने चाहिए। (निर्गमन 20:2-3)

अपनी वचनबद्धता से हम अपना नीजी नाता उस सच्चे जिंदा ईश्वर से हमेशा के लिए स्थापित विस्तारीत और बनाए रख सकते है। पहली आज्ञा जिसकी प्राथमिक सोच है, 'मेरे सिवाय आप का दुसरा कोई भी ईश्वर नही होना चाहिए'।

पहली आज्ञा हमे ताकीद देती है, कि ईश्वर के खिलाफ हमे कुछ भी नही रखना चाहिए जैसे कि धर्म, संस्कृती परंपरा या कोई भी दुसरा अंश। यह सब हमे यह सिखाता है कि, ऐसी किसी भी चीजपर हमे निर्भर नही होना चाहिए सिवाय एक सच्चे ईश्वर के। यहाँ जीवन का दुसरा कोई भी मार्ग या आशिर्वाद नही, सिवाय येशू के। इसलिए उसे प्रशंसापात्ररुपी ऐसे उँचे स्थान पर बिठाकर उसे ऐसा नाम दिया, जो सभी नामों से महान है, श्रेष्ठ है, वह है येशू का नाम, जिसे सुनते ही सभी घुटने झुक जाए, ना केवल स्वर्ग मे, लेकिन धरती और पाताल मे भी। हरएक जुबान कबूल करे की येशू मसीह ही उन का स्वामी है, महिमा हो पिता परमेश्वर की। (फिलीप्पीयो 2:9-11) येशू सचमुच, आपका ईश्वर जो स्वर्ग से है, सबसे उँचे आसमान, धरती और आपमे ही समाया हुआ है। (व्यवस्था विवरण 10:24) यह विश्व जहाँ हम रहते है, वह उसने अकेलेने ही बनाया है, और संभालता भी वह ही है।

यह पहले आज्ञा का सामर्थ्यवान संदेश है। हम हमारे सृष्टीकर्ता, चमत्कार दिखानेवाले ईश्वर कि उपासना करते है, उस के लिए कार्य भी करते है, जिसने पूर्वकालीन इस्त्रायल को ईजिप्ती बंधनों से छुडाया है। हमे हमारे अस्तित्व और आशिर्वाद का समर्थन किसी दुसरे को नही देना है। हम ईश्वर से प्रेम करते है, उसका आदर-सन्मान करते है, ताकी हम उसके सच्चाई का और नीजी संबंधो का आनंद ले सकते है।

हम सब ईश्वर से ही आये है। पॉल हमे चेतावनी देते है कि, हम घमंडी न बने, नाही हमारा विश्वास सिर्फ दौलत मे रखे, जो अनिश्चित है, परंतु आप अपनी आशा ईश्वरपर लगाए जो भरपूर मात्रा मे सबकुछ देता है। हमारे आनंद के लिए (1 तीमुथीयुस 6:17) सिर्फ एक ही विश्वासपूर्ण आश्वासन है और वह है हमारे और ईश्वर के आपसी संबंध जिस से हमारा भविष्य सुरक्षित हो सकता है।

विधाता कि उपासना करो, उसके रचना की नही। विधाता ने हमे बनाया उस की रचना के रूपमे ताकी हम उस की उपासना कर सके। उस ने हमारे आवास के रूपमे यह सुंदर ग्रह बनाया। हमारे दैहिक बचाव के लिए उस ने सारी चीजे हमे दे रखी है। यह तो उस की इच्छा है, की उस की देन का हम आनंद ले।

इसी तरह ईश्वर भी चाहते है, कि हम समझ ले की हम किसी भी दुसरी चीज कि जो उस कि रचना है। उसकी हम उपासना न करे। सिर्फ विधाता को, नाही की रचना को वह सन्मान मिलना चाहिए।
आमिन,

संपादकीय डेस्क

इस्त्राएल शुभसमाचार

अगली
इस्त्राएल शुभसमाचार
यात्रा
अक्तुबर
15 - 24, 2009
इजिप्ट-जॉर्डन-इस्त्राएल
आज ही अपना नाम दर्ज किजिए

मैं ही क्यों?

आज कल शादीयों की संस्था चलाने वाले इतने समृद्ध हो गए है कि, समाजसेवक के रुप में अपनी जरुरतों को संतुष्ट करते करते वह भूल चुके है कि, पति और पत्नी का जीवन एक दुजे के साथ होता है। बहुतसे लोग ऐसे शादीयों के जाँल में फँस चुके है, जहाँपर उनको एक दुसरे से अलग होना पड़ा। पती गल्फ में (आखातोंमें) काम करते है और पत्नी गल्फ के कमाये हुए पैसोंसे खरीदे हुए घर में अकेले रहती है। या तो फिर अपने ससुराल वालों के साथ जहाँ पति का साथ ही नहीं। और ऐसी औरत उसके अकेलेपन के कारण बडी आसानीसे आदमियों की भटकती नजरों की शिकार हो जाती है।

बतशेबा के पती उरिय्याह, राजा दाऊद के लिए संग्राम लड़ने के लिए ऐसेही लगातार घर से दूर रहते थे।

एक साँज के समय कुछ ऐसा हुआ कि, साँझ के समय दाऊद पलंग पर से उठकर राजभवन की छत पर टहल रहा था, और उसको एक स्त्री जो अति सुंदर थी, नहाती हुई देख पड़ी। जब दाऊद ने भेजकर उस स्त्री को पुछवाया, तब किसी ने कहा, “क्या यह एलीआम की बेटी और हित्ती उरिय्याह की पत्नी बतशेबा नहीं हैं? तब दाऊद ने दूत भेजकर उसे बुलवा लिया; और वह दाऊद के पास आई, और वह उसके साथ सोया। तब वह गर्भवती हुई, तब दाऊद के पास कहला भेजा कि मुझे गर्भवती हूँ। (2 शमूएल 11:2–5)

चाहे जो भी हालांत हो, लेकिन दोनो भी मांस की वासना के जाल में फँस गए! बेतशबा जो राजा की माँग और मिठी बातों से कमजोर हो गई थी। वह भी इस व्यभिचार के पाप की भागीदार बनी।

लेकिन यही बेतशेबा अपने आप को येशू के वंशावली में पाती है। उसका भरोसा क्या था?
2 शमूएल 11:6–13 में राजा दाऊद उरिय्याह को बेतशेबा के बच्चे का पिता साबित करने का प्रयास करता है, जो उस पाप की वजह से होने वाला था। और एक पाप को छिपाने के लिए दूसरा पाप हत्या की ओर बढावा देता है।

परंतु पवित्र बाइबल का नायक ना तो दाऊद है, और ना ही कोई ऐतिहासिक व्यक्ति। लेकिन पवित्र बाइबल का नायक केवल येशू मसीह ही है। क्या वे पापों को बदलकर, पापियों को ऐसा उच्च स्थान दे सकते है, जो पापियों की सोच से उपर है?
सामर्थ्यशील और मुक्ति दिलाने वाला एक ऐसा वचन इफ़िसियों 2 जो कहता है, कि हम उनके अनुग्रह द्वारा बचे है, और कहता है कि, हम पहले से ही स्वर्गीय स्थानों में मसीह के साथ विराजमान है। यही आपका स्थान है, मेरे प्यारो, अगर आपने पश्चाताप करते हुए, अपने पापों से दूर जाकर येशू को अपने जीवन का प्रभू और बचावकर्ता के रुप में स्वीकारा है। तो मसीह कहाँ विराजमान है? वे सब प्रकार की प्रधानता, अधिकार, सामर्थ्य और प्रभूता के और हर एक नाम के उपर जो न केवल इस दुनिया में पर आनेवाले युग में भी लिया जाएगा। (इफ़िसियों 1:19–23) और यही स्थान है जहाँपर आप उनके साथ हो।
राजा दाऊदने अपने जीवन भर में बहुत से तकलिफों का सामना किया, लेकिन व्यभिचार और उरिय्याह की हत्या का पाप सबसे संगीन था। उसने हत्या की योजना इस तरह से बनाई कि, उरिय्याह खूद, अपने मौत का प्रमाणपत्र लेकर लढ़ाई के मैदान पर गया।

दाऊदने आमतौर पर सोचा कि, वह आसानीसे इससे छुटकारा पाएगा। लेकिन नहीं ...... (2 शमूएल 12:7–10) परमेश्वर का प्रकोप दाऊद पर आ गया। दाऊद परमेश्वर के सामने बहुत रोया और क्षमा की याचना भी की। उसकी प्रार्थना भजन संहिता में लिखी गई है। परमेश्वरने अपने उद्धार की योजना में, अपने चुने हुए लोगों को एक कार्य करने के लिए दिया है। और इसी उद्धार के खातीर परमेश्वरने दाऊद को क्षमा कर दिया। उस बच्चे की मौत के पश्चात जो बिना विवाह के जन्मा था, और वह संतान जो बेतशेबा से शादी के बाद दाऊद को हुई उसे स्वीकार कर परमेश्वने अपना उत्तराधिकारी बनाकर येरुशलेम में उसके द्वारा एक विशाल खलिसिया बनवायी। लेकिन क्यों बेतशेबा का ही पुत्र, जब कि दाऊद के पहले शादियों मे से कोई भी उसका उत्तराधिकारी बन सकता था?
तो मै अपने आपसे पुछती: “मै ही क्यों?

बहन लिनेट मेरगुल्याओं

Kids' Corner

Word Search
Fruit of the Spirit

Look forwards, backwards, upwards, downwards and diagonally to find the Fruits of the Spirit given below.

Love Joy Peace Patience Kindness Goodness
Faithfulness Gentleness Self Control

F	G	E	N	T	L	E	N	E	S	S
A	J	A	I	N	O	N	A	E	R	T
I	P	E	T	E	R	K	L	M	I	A
T	S	R	P	A	T	I	E	N	C	E
H	O	O	B	F	N	N	S	N	B	S
F	U	F	L	N	O	J	O	Y	O	S
U	L	O	V	E	C	I	J	E	O	E
L	F	M	N	K	F	U	N	D	K	N
N	R	O	T	I	L	H	P	W	G	D
E	O	C	Y	P	E	A	C	E	F	O
S	E	U	R	T	S	N	O	M	V	O
S	I	K	I	N	D	N	E	S	S	G

सफलता की कुँजी

परमेश्वर की महान उपस्थिती मे आना

इस कहावत को "परमेश्वर कि महान उपस्थिती मे आना" आज कल खलिसिया में स्तुती और आराधना के तौर पर इस्तमाल किया जाता है, जैसे की हममे से बहुत से लोग इस युग मे इस बात को समझ ही नहीं पा रहें है। जब की हम इसे पूरे तहे दिल से करे तो भी हम उसपर ध्यान नहीं लगा पाते। क्यों ? सच बताए तो, हमारी जो श्रद्धा परमेश्वर के लिए है, उस मे सच्चाई नहीं है।

जैसे की एक उदाहरण, जब मै बढ रहा था। अगर कोई अपने सरपर टोपी पहनकर खलिसिया से गुजरता है, तो तुरंत वह टोपी निकालकर परमेश्वर को आदर सम्मान देता है, जैसे कि आज हम कहते है, "ठीक है, यह सब जरुरी नहीं है, यह तो स्वाभाविक है"। फिर भी मुझे ऐसा लगता है कि, हमने अपनी आस्था संस्कृति को खो दिया है। हमे आत्मीक रुप से यह सत्य जानना जरुरी है कि, एक हमारा परमेश्वर ही पवित्र, महान, और सामर्थ्यवान है। वह पूरी तरह से श्रद्धा और भक्ती का हकदार है।

जैसे की अनुग्रह के बारे में हमने गलत सोचा है। जो हम आज्ञाकारी होते है, परमेश्वर की ओर और उनके प्रति हमारी जो भक्ती है, वह स्वभाविक है, जैसे कि हम पाप करते है, और उसी तरह हम पश्चाताप करते है, कोई खलिसिया में या किसी प्रार्थना सभा मे, जैसे कि हम उस दरवाजे से निकलते है हम सोचते है कि हम किसी विश्वासी प्रार्थना सभा में जा सकते है। इसिलिए आज कल कि खलिसियाँओ मे ईश्वरज्ञान वृत्ती अनुग्रह कानुन को खत्म कर देती है।

हम प्रभू येशु के लहू को कुछ इस तरह से इस्तमाल करते है, जो हमे पाप करने से पहले कुछ समय के लिए अच्छा महसूस करवाता है। यह बहुत दुख की बात है कि, हमारे प्रभू येशू को तहे दिल से प्यार नही करते हम उसे इस्तमाल करने से हिचखिचाते नहीं। फिर हम यह इल्ज़ाम लगाते है, कि परमेश्वर हमारे प्रार्थना का जवाब नही देते। सच्चाई यह है कि, परमेश्वर का अनुग्रह हर कानून को अलग करता है। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि, सिर्फ प्रभू येशू का अनुग्रह हमारे जीवन में दुनिया कि हर उस चिज को पूरा कर सकता है, असंभव को संभव कर सकता है।

प्रभू येशूने अपने हुकुंमो मे कहा है (मत्ती 22:37)की "तू अपने परमेश्वर, अपने प्रभू से, अपने सारे मन, अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुध्दि के साथ प्रेम रख।" परमेश्वर खलिसिया से कह रहे है कि, मेरी आज्ञा का पालन तुम्हे कुछ चाहिए इसलिए मत करना, लेकिन तुम मुझ से प्यार करते हो इस कारण करना। अगर तुम मुझसे प्यार करते हो तो मेरी आज्ञा का पालन करोगे। (यहुन्ना 14:15) यदि तुम मुझ से तहे दिल से प्यार करते हो, तो मै तुम्हारे उपर कोई दण्ड या न्याय नही लाउंगा।

परमेश्वर नही चाहते कि हम उनका इस्तमाल नरक से बचने के लिए एक बिमा कि भाँती करे। वह चाहते है कि हमारा एक पवित्र संबंध हो, आत्मीक फल हो। ना तो धर्म का पालन करने वाला। वह हमारे पिता बनना चाहते है, वह हमसे संपर्क करना चाहते है। संपर्क याने क्या? यह एक मैत्री है जो हमारे स्वर्गीय पिता के द्वारा जिससे हम हमारे प्यार का इजहार करते है उसीकी इच्छा को खोजना और उसका पिछा करना। इसका मतलब हमे "परमेश्वर के महान उपस्थिती मे आना", उनके मन और हृदय मे समाना और उनकी इच्छाओं में एक होना। परमेश्वर के करीब जाना यह कोई सीधी बात नही जैसे हम वास्तव मे सोचते है।

ईश्वर आप को आशिर्वादित करे।

संपादकीय डेस्क

युवती संगती

चकराये से, खोये–खोये से और अपनी मंझील का पता न होना, यही युवक–अवस्था का साधरण संक्षिप्त वर्णन हो सकता है। इस तेजीसे बदलती दुनियासे साधारणता से जीवन बिताना यह सचमुच एक चुनौती है।

युवतीयों की एक सामान्य समस्या है, "संबंध"! जिसे सामाजिक सम्मिलन (डेटिंग) कहा जाता है। अगर हम किसी को चाहते है, उसे अपना जीवन साथी बनाना चाहते है तो उसके साथ वक्त गुजारते हुए उसको जानने की कोशीश करने मे क्या बुराई है? क्या यह गलत नहीं? बहुत सारे लोग इन सामाजिक सम्मिलन (डेटिंग) द्वारा सुख की जिंदगी बिताते दिखाई देते है। तो फिर क्यों ना हम भी उसी तरह आचरण करके, जिंदगी का आनंद अनुभव करे?

'आनंद' इस शब्द का सही अर्थ क्या है? ज्यादातर लोग आनंद का मतलब 'सुख' या 'खुशियाँ' समझते है। मगर क्या कोई बुरा काम करके आनंद पा सकता है? क्या, इस प्रकार का आनंद अच्छा होता है या बुरा? क्या आप ईश्वर आदेशों पर चलना पसंद करोगे, या अभी भी उन सांसारिक सुख मे ही आनंद मनाना पसंद करोगे? किशोरी युवा वर्ग (जी. वाय. सी.) इस कक्ष युंवतीयों को ईश्वरी ज्ञान सिखाया जाता है। इस कक्ष का खास उद्देश है कि लड़कियों को शिक्षण देकर ' ईश्वर की सामर्थ्यवान नारीयाँबनाकर विकसीत करना है, ताकि वे अध्यात्मिक विश्वास की ताकद से किसी भी कठीनाईयों का सामना कर सके।

कुछ सप्ताह पहले ही हमे "पामेला की प्रार्थना" नामक एक खिस्ती सिनेमा दिखाया गया। यह एक सुंदर और महान सिनेमा है, जिसे हमे बहुत कुछ सिखने मिला। यह सिनेमा वर्तमान कालसे संबंधि है। इसमे, वक्त आने के पहले किसी के साथ संबंध रखना कैसे गलत है यह बहुत अच्छी तरह से बताया गया है। इससे हमें पती–पत्नी के पवित्र संबंधों के बारे मे भी अच्छी जानकारी मिली। सही वक्त और सही जीवनसाथी कैसे पहचाना जाए? ईश्वर कैसे हमारे जीवन मे सही वक्त पर, हमारा सही जीवनसाथी, हमारे मार्गदर्शन के लिए सही संकेत तथा चिन्ह लिए भेजते है, यह बहुत ही खुबसुरती से इस सिनेमा मे बताया गया है। अब मै जान चुकी हूँ कि वक्त के पहले सामाजिक सम्मिलन (डेटिंग) क्यों नहीं करना चाहिए, और हमारे लिए बनाई गयी ईश्वर की योजना का हमे इन्तजार करना चाहिए। ऐसे बहुत सारे शक जी. वाय. सी. ने दूर किए है। जी. वाय. सी. हमे ईश्वर को अच्छी तरह जानने मे और उसकी राह पर चलने के लिए मदत करती है। यह हमे प्रेम और सद्भावना सिखाती है। अब हम ईश्वरी वाणी का अर्थ और उसका नित जीवन के साथ संबंध जानने लगे है। हम अच्छी तरह से ईश्वरी वाणी का अर्थ समझ लेते है अब हमे सच और झूट की अच्छी पहचान होने लगी है। हमे यहाँ परमेश्वर कि आत्मा को जानते हुए इस सांसारिक जीवन मे कैसे रहना है यह सिखाया जाता है। हम यहाँ हमारा अनुभव और गवाहियाँ बाटते है, जिससे हमारा विश्वास मजबूत होता है। यहाँ हम ईश्वर से मिले हुए आषिश के लिए उनको महिमा देते है। यहाँ हम ईश्वर की स्तुती और उपासना करते है, उसको धन्यवाद देते हुए उसके खुशी के गीत गाते है और बहुत सारा आनंद अनुभव करते है। हाँ मेरे प्यारे मित्रो हमारे पास खुशी है।

हम ब्रदर मॅन्युएल, सिस्टर लिनेट और सारे जेष्ठ गुरुजनों को हम येशू मसीह के सच्चे लढवय्ये बनाने से मदत करने के लिए धन्यवाद देते है।

– युवती संगती (जी. वाय. सी.)

जीत कैसे हासिल हो ?-(भाग-5)

जीतना क्या होता है ? :-
बहुत सारे लोग जीतनेवाले के बारें में सोचते है कि, उसने उसका लक्ष्य, संपत्ती, प्रतिष्ठा, अनुग्रह, सामाजिक स्थिती और ताकद इन के साथ पा लिया है। मैं कहता हूँ, वह इन्सान, जिसके पास आशा है, वह कभी ना कभी जितेगा जरुर। जीत यह एक विचार भाव है, जो आप को सीधा येशू ने क्रूस पर चुकाई हुई किमत की ओर ले चलता है। विश्वासियों के लिए जीत माने संतोष और प्रसन्नता से ईश्वर के मार्ग मे अपना लक्ष हासिल करना है। जीत की शूरुवात आशा, दृष्टी, लक्ष, एकाग्रता, पक्का इरादा और इच्छाशक्ति से होती है।

आशा : प्रत्येक जीवित व्यक्ति के पास आशा होती है। सभोपदेशक 9:4 ब कहता है की, "जीवित कुत्ता मरे हुए सिंह से बेहतर है।" क्योंकि जीवित कुत्ते के पास आशा होती है, लेकिन मरे हुए को कुछ भी पता नहीं होता। उन के पास आगे जाकर कुछ भी फल या पुरस्कार नहीं होता। हर बात की शूरुवात आशा से ही होती है। यशायाह की किताब कहती है की, "जो कोई परमेश्वर में आशा रखते है वह अपनी शक्ति को नया करेगा। वे गरुड़ की तरह ऊँची उड़ान लेंगे, दौड़ते रहेंगे मगर थकेंगे नहीं, वे चलते रहेंगे मगर कमजोर या मूर्छीत (बेहोश) नहीं होंगे।"

दृष्टी : आशा को दृष्टी मे बदलना है। दृष्टी यह एक ऐसी बात है, जो शारिरीक आँखों से नहीं देखी जा सकती, उसे सिर्फ अध्यात्मिक आँखों से ही ग्रहण किया जा सकता है। एलीशा कि दृष्टी थी की वह एलायझा के दुगने हिस्से पर भी अपना उत्तरदायीत्व बनाये। आखिर तक उसने एलायझा का पिछा नहीं छोडा। जहाँपर भी वह जाता था, एलीशा उसका पिछा करता था। कार्य बिना दृष्टी का नतीजा असफलताही है, और वैसे ही दृष्टी बिना कार्य भी निरर्थक होती है

लक्ष : एक आदमी सफर कर रहा था। एक चौराहे पर रुककर उसने एक वयोवृद्ध व्यक्ति से पूछा की यह रास्ता मुझे किस ओर ले जाएगा। उस बूजूर्गने पूछा आपको किस तरफ जाना है? उस आदमीने कहा " मुझे नहीं पता"। तब उस बूजूर्गने उससे कहा की फिर कोई भी एक रास्ता पकड़लो क्या फर्क पड़ेगा। जब येशू इस दुनिया में आये तब उन्हे उनका लक्ष अच्छी तरह से मालूम था। उनका लक्ष था पिता कि इच्छा को पूर्ती करना। हमे दृढ होना चाहिए, उस दृढ विधवा स्त्री की तरह जो बाइबल में बताई गयी है, जो न्यायधीश के घर जाकर उसको तब तक पुकारती रही जब तक की उसके समस्या का हल नहीं निकला और उसे न्याय मिला।

ध्यान केंद्रित करना : यह आपको सफलता की तरफ ले जाने वाला एक महत्वपूर्ण कदम है। येशू को उपहार ले जाने वाले तीन बुध्दिमान आदमीयों ने येशू को खोज निकाला क्योंकि उनका ध्यान उस तारे (स्टार) की ओर केंद्रित था। ईश्वर के साथ चलते हुए जीत पाने के लिए आपको अपना ध्यान केंद्रित करना जरुरी है। और सत्य से अलग नही होना है। सफलता के लिए, ईश्वर जो कुछ कहे वह सुनना और करना बहुत जरुरी है।
"इस जीवन के कानून की किताब का दिन – रात अध्ययन करके इसे मुँह पाठ करो ताकि, आप ध्यानपूर्वक इसमे लिखी बाते कर सके। तब ही आप उन्नती और सफलता पाओगे।" (यहोशू 1:8)

पक्का इरादा : एक आदमी जो 38 सालसे अशक्त था, हिलाए गये तालाब के पानी में जाने के लिए हिचकिचा रहा था, क्योंकि उसका इरादा पक्का नहीं था। इसी कारण उसे चंगाई नहीं मिल रही थी। पक्के इरादे आपको किसी भी कठिनाईयों पर काबू पाने की ताकद देते है। यह केवल ईश्वर के अनुग्रह से ही संभव हो सकता है। इरादों का मतलब किसी भी हालात मे मैं मेरा ध्येय प्राप्त करुंगा। याद करो दाऊद और गोलियत का संघर्ष? दाऊद को महाकाय गोलियत को मारना असंभव नहीं लगा, मगर उसे ऐसा लगा गोलियत उसके हाथो से बच ही नहीं सकता। पक्के इरादोंवाला आदमी अपना काम होने पर विश्वास रखता है, वह उसे अधुरा छोड़ता नहीं। सभोपदेशक 7:11 कहता है, दौड़ केवल तेज भागने के लिए नहीं होती, लढाई केवल बलवानों के लिए नहीं होती, नाहीं खाना केवल बुध्दिमानों के लिए होता है, नाही दौलत होशियारों के लिए होती है, और नाही अनुग्रह केवल पढ़े – लिखों के लिए होता है, मगर वक्त और मौका सभी को मिलता है।"

इच्छा शक्ति : जीवन मे कितनी भी ऊँचाई पर आप पहुँचे हो मगर इससे इच्छा शक्ति को तौली नहीं जा सकती बल्की आप कितनी बार गिरकर फिर से उभरे हो इस पर तौली जाती है। फिर से उभर आने की क्षमता हमारी जीत पक्की करती है। थॉमस एडीसन बिजली के बल्ब का संशोधनकरते हुए लगबग 10,000 बार असफल हो चुके होंगे मगर उन्होंने अपना प्रयास नहीं छोडा। उन के लिए हार (असफलता) एक घुमावदार रास्ता था, अंत नहीं। जब तक मूसा के हाथ उपर उठे दिखते थे तब इस्त्राएली अमालेकायटस के विरुद्ध मे जीतते नजर आ रहे थे। मूसा के हाथ थक चुके थे मगर मूसा नही क्योंकि उनकी इच्छा–शक्ति प्रबल थी। उसका अंतिम ध्येय था इस्त्राएलीयों की जीत।

विजेताः येशू विजेता है, क्योंकि उन्होंने हमारे और आपके लिए युद्ध जीता है। शुरु से ही पिता परमेश्वर को मनुष्य जाती को आजाद करने की आशा थी। इसलिए उन्होंने नबीयों को राजाओं को, और बहुत सारों को भेजा मगर वे सारे असफल रहे। आखिर उन्होंने अपने इकलौते पुत्र को भेजा, जिसका लक्ष था मुक्ति दिलाना ताकि हम आजाद जिंदगी गुजार सके। जो आदम ने खोया था वह पुनः ठीक करना यह पिता की आशा, और पुत्र की दृष्टी बनी। वह अपने लक्ष पर इतना केंद्रित था, कि उसने कलवरी अपना बलीदान स्थल भी चलकर पार कर दिया। उन्होंने उस पेड़ को शापित किया, ताकि हमारा शाप नष्ट हो सके। मृत्यु के अंतिम समय तक उनका निर्धार पक्का था, उन्होंने चोर को भी स्वर्ग मे भेजने का मौका गवाया नही और इसी तरह उसका आत्मा नरक जाने से बचा लिया। अतंकाल तक गहरी इच्छा शक्ति से वे लड़ते रहे, जब सब खत्म हुआ, वे बोले, "अब सब समाप्त हुआ।"

येशू ने हमारे लिए अपना सबकुछ खत्म किया। यह वक्त है, उसने दियी हुई आजादी मे रहकर, विजेता की तरह उस मे आनंद मनाने का। तो भाईयो और बहनों विजयी जीवन जीने से आप को कौन रोक सकता है? तो जाओ और जीत हासिल करो, सिर्फ एक ही नाम से – येशू।

संपादकीय डेस्क

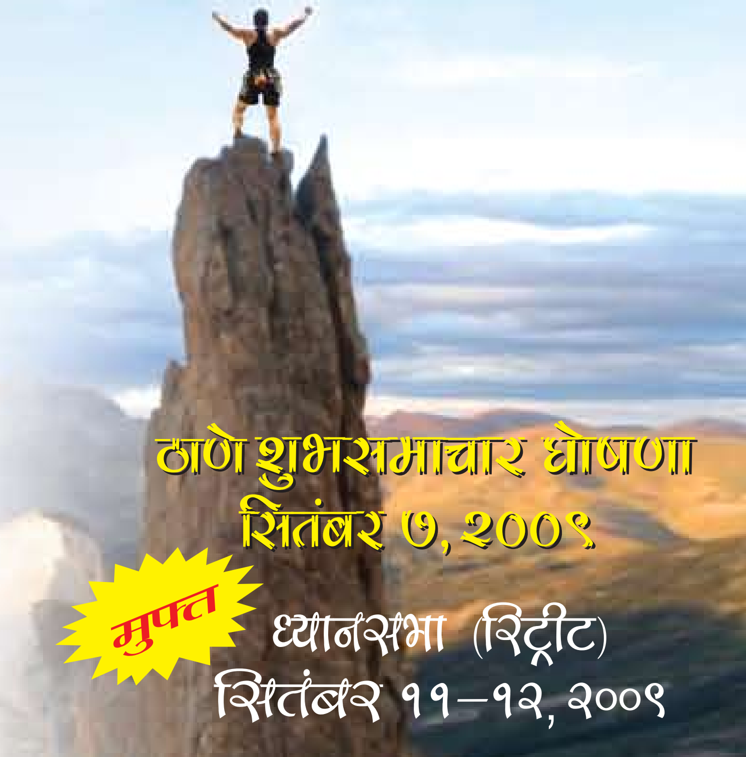

ठाणे शुभसमाचार घोषणा
सितंबर ७, २००९

मुफ्त
ध्यानसभा (रिट्रीट)
सितंबर ११–१२, २००९

BMM के मासिक प्रकाशन के बारे में आप के सुजाव हमें *bulletin@manuelministries.org* पर किजिए।

जीवीत आशा में एक नया जन्म

११ अगस्त २००९ को बहन सिसिलीया अलमेडा जो बहन लिनेट की मा और भाई मैन्युएल की सासूमाँ थी, हमे छोड चली गयी और यह संदेश मुझे दे गयी।

वे छोड गए हमे ९७ साल की उम्र में,
मनाने अपना जन्मदिन स्वर्ग में।
ऐसी भली स्वभाव की महीला कौन भला पा सकता है,
वह अपने घर के काम को और अपने परिवार को पुरे दिल से,
पुरे मनसे और धार्मिकता से करती थी।
उसके परिवार के सदस्य उसे आशिर्वादीत कहते थे।
जो महिला यहोवा का भय मानती थी,
वह वाकेयी काबीले तारीफ थी। (नीतिवचन ३१:१०–३०)
चाहे कितने भी वादे परमेश्वर करे,
वे सब मसीह में 'हाँ' और उसी में 'आमीन' है।
यही कुछ बाते है, जो मैने उनसे सीखी है,
एक नया जन्म, एक नई आशा, प्रभू येशू मसीह में, जो मुर्दो मे से जी उठे है,
और हम सब उसके उत्तराधिकारी है,
जिसका कभी नाश न हो और स्वर्ग मे अनंत जीवन हो। (१पतरस १:३–४)
जैसे की मैने आपको हमारी पिछली मासिक प्रकाशन में बताया था।
भाई मैन्युएल की सेवकाई के साथ
मैं और मेरी पत्नी, बाइबल के उल्लेखित भूमी पर गए थे।
और इस बुढापे मे भी,
हम सब परमेश्वर के वचनों मे इकठ्ठा होते थे।
हम इस्त्राएल मे छोटी छोटी चट्टान पर बिना जुतों के चले,
गलिल के समुद्र किनारे हमने पकाई हुई मछली और रोटी का मजा उठाया,
जिसे याद कर मै आज भी गीत गाता हूँ।
बहन सिसिलीया हमारे साथ डोलोरोसा के उस मार्ग पर चली,
अपना ही क्रुस उठाए हुए, जो नहीं बनाया गया था किसी शिल्पकार ने।
यहाँ परमेश्वर का वचन पुरा होता दिखाई देता है।
तरुण तो थकते और श्रमित हो जाते है। (यशायाह ४०:३०–३१)
पर वे अपने क्रुस को लेकर चल रही थी।
हे मृत्यु तेरा डंक कहाँ रहा? (१कुरिन्थियों १५:५५)
तुम हो हर एक मनुष्य के लिए।
हर एक धर्म के लिए।
हर एक जाती के लिए।
जितने भी कब्रस्थान है, वह हरे रंग से ढ़के है,
जो हमने देखा हैं।
पर नया जन्म यहाँ नहीं, जो कोई भी इसे जानता है।
वह साफ सुत्रा है, जो कल के लिए जीता है,
आनंद से, दुखसे नहीं।
हमारे जीवन के हर दौड़ को आनंद और अनुग्रह से दौडना है।
और अन्य सारी इच्छाओं कि अग्नी को हमे बुझाना है।
जो भी राख बचेगी वह सब एक समान होंगी।
मौत का दाम भला कौन चुका सकता है ?
यह वे ही है जिन्होंने हमे जीवन की साँस दी है।
हमारा पुन:जीवन और आशा उसी मे है।
क्योंकि जो आनेवाले दिन है, वह इतने कठोर नहीं होंगे।
यह सब इसमे पूर्ण होता है की "परमेश्वर ही उसकी ज्योति और उध्दार है,
और उसे किसी बात का भय नहीं था। मैं किससे डरुँ?"
(भजन संहिता २७:१)
विश्वास से कहो कि,"मै तुम्हारे दर्शन को खोजता हूँ परमेश्वर।
जीवितों की पृथ्वी पर मै यहोवा की भलाई को देखूँगा"
(भजन संहिता २७: ८–१३)
यह कविता मै भाई मैन्युएल और सिस्टर लिनेट को सम्मानीत करता हूँ,
जिन्होंने मुसे इसे लिखने का मौका दिया।

बेनेडिक्ट वी. फर्नांडिस

SCHOLARS'
COACHING INSTITUTE
Encash your Potential
COMMERCE
XI, XII & F.Y.B.Com
Blue Nile Apts, Behind Stanislaus School, Bandra (W)
© 6529 0709/08 Cell:9833952288

सहभागी सभाएँ

बुधवार
इंडियन ऐड्युकेशन सोसायटी (I.E.S.)
मानिक सभा ग्रिहा
लिलावती हस्पताल के सामने,
बांद्रा (पश्चिम), मुंबई-400050, भारत
समय: शाम 5:30 p.m

शुक्रवार
ग्रीनविलेज रिसॉर्टस
आकाशवाणी केंद्र के सामने,
मार्वे रोड, मलाड (पश्चिम),
मुंबई-400064, (भारत)
समय: शाम 6:00 p.m

Live in the Spirit
BRO. MANUEL MINISTRIES

मुख्य कार्यालय
एस-4, ब्ल्यु नाइल अर्पाटमेन्टस
सी. एच. एस. लिमीटेड
प्लोट नंबर 39, वरोडा रोड
बांद्रा (पश्चिम), मुंबई-400050,
भारत

ASHUTOSH PRESS - LOWER PAREL